बलबीर सिंह वर्मा 'वागीश'

झूला झूलने जाएंगे

छुट्टी का है दिवस आज तो, झूला झूलने जाएँगे।
खेल-खेलकर देखो हम तो, सारे मौज मनाएँगे।।

चिंटू पिंटू, गौरव, सौरभ, बंटी बबली सब आओ,
मस्ती में सब झूम-झूम कर, अब सारे खुशी मनाओ,
जोर-जोर से झूले लेकर, नभ से हाथ मिलाएँगे।
छुट्टी का है दिवस .....

नाच रहे हैं मोर पपीहा, कोयल राग सुनाती है,
काली-काली घिरी घटाएँ, उमड़-घुमड़ कर आती है,
रिमझिम-रिमझिम बारिश में हम, मिलकर खूब नहाएँगे।
छुट्टी का है दिवस .....

इंद्रधनुष भी नभ से निकला, सबके मन को भाया है,
धरती पर हरियाली छाई,, पावन सावन आया है,
पेड़ों पर ही झूले पड़ते, हम भी पेड़ लगाएँगे।
छुट्टी का है दिवस .....